मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन

(पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग म.प्र.)

(2)

स्व–सहायता समूह के सहयोग एवं मेहनत से बदली हाथ की लकीरें गरीबी रेखा से ऊपर पहुंची सुशीलाबाई

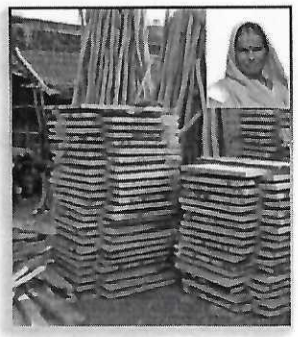

गरीबी एक बड़ी चुनौतीः–

राजगढ़ जिले के ब्यावरा तहसील में ग्राम कचनारिया के कैलादेवी स्वसहायता समूह की सचिव श्रीमती सुशीला बाई की यह कहानी है। श्रीमती सुशीला बाई अनुसूचित जाति वर्ग में आती हैं। कचनारिया गांव में प्रवेश करते ही हमें अनुसूचित जाति समुदाय की कॉलोनी दिखाई दे जाती है। इसी कॉलोनी में श्रीमती सुशीला बाई का छोटा सा कच्चा मकान था। इस मकान में दो छोटे कमरे, एक रसोई घर, एक छोटा सा आंगन था। इस मकान में श्रीमती सुशीला बाई का परिवार और उनके देवर का परिवार संयुक्त रूप से रहता था।

श्रीमती सुशीला बाई के पति एवं देवर मकान निर्माण कार्य के मिस्त्री के रूप में मजदूरी का कार्य करते थे। सुशीला बाई अपनी देवरानी के साथ मजदूरी का कार्य करती थीं। श्रीमती सुशीला बाई के दो बेटे एवं 3 पुत्रियां हैं। ये सभी बच्चे कचनारिया गांव के स्कूल में ही पढ़ाई करते थे। आर्थिक तंगी के कारण परिवार के सभी सदस्यों को मजदूरी करना पडती थी।

मिस्त्री का काम करते समय उनके पति एक बार 20 फीट से नीचे गिर गये थे जिससे उनका एक पैर पूरी तरह से खराब हो गया था। अब परिवार पर भरण–पोषण के संकट के बादल मंडरा रहे थे। इलाज करवाने एवं परिवार को चलाने की गंभीर चुनौती सामने थी।

मजदूरी से जो भी रूपये मिलते उससे ही पूरे परिवार को अपना गुजर–बसर करना होता था। श्रीमती सुशीला बाई की ये डी.पी.आई.पी. द्वितीय चरण परियोजना में जुड़ने के पहले की स्थिति थी। उस समय तो सब मिलाकर परिवार की आय मजदूरी एवं कृषि से मासिक 8000 रू. 10000 रू. हो पाती थी।

ग्राम कचनारिया के कैलादेवी स्वसहायता समूह से जुड़ावः–

ग्राम कचनारिया के कैलादेवी स्वसहायता समूह में जुड़ने के बाद श्रीमती सुशीलाबाई ने समूह से ऋण लेकर 50 प्लेट की सेण्टिग खरीदी। जो कभी उनके पति किराये से लिया करते थे और कभी–कभी मिस्त्री के रूप में भी मजदूरी किया करते थे।

परेशानियों के इस दौर में सुशीलाबाई ने विचार बनाया की वह समूह का पूरा पैसा जमा कर चुकी हैं अभी बैंक ऋण भी समूह को मिलने वाला है क्यों न फिर समूह से ऋण

लेकर एवं कुछ पैसा मिलाकर सेंण्टिग का सामान बढ़ा लें और उसे किराये पर दें, जिससे परिवार की आमदानी भी बढ़ेगी एवं भविष्य में स्वयं के भी काम आएगी यह सोच कर उन्होंने 150 प्लेट की सेंण्टिग और क्रय कर ली।

अब श्रीमती सुशीलाबाई के पास 200 प्लेट की सेंण्टिग हो गई थी। जिसे वह किराये पर देने लगीं। इस काम से अच्छी खासी आय होने लगी, कुछ समय बाद 300 प्लेट उन्होंने खुद की बना ली, और आज इनकी आय 15000 से 18000 रू. मासिक हो गई है। अब धीरे–धीरे समूह का ऋण भी जमा कर दिया पति का इलाज भी करा लिया अपने दोनों बेटों को पढ़ाई करने इन्दौर भेज दिया है। 3 बेटियों को उच्च शिक्षा दे रही हैं। यह संयुक्त परिवार आज श्रीमती सुशीलाबाई की समझ एवं स्वसहायता समूह से जुडकर मिली आर्थिक सहायता की बदौलत अच्छा जीवन जी पाने के लिये सक्षम हो चुका है।

श्रीमती सुशीला बाई में आया सकारात्मक बदलावः–

एक समय गरीबी रेखा से नीचे की सूची में शामिल यह परिवार अब आत्मनिर्भर की श्रेणी में आ गया है। इस उपलब्धि का श्रेय श्रीमती सुशीलाबाई अपने स्व–सहायता समूह को दे रही हैं कि बुरे वक्त में समूह ने उनकी मद्द की। वह ग्राम उत्थान समिति की अध्यक्ष एवं महिला शक्ति सामुदायिक सहयोग संस्था (सी.एल.एफ.) आमल्याहाट की अध्यक्ष हैं।

श्रीमती सुशीलाबाई में समूह से इतना उत्साह आया की वह ग्राम ज्योति के कार्य करने के लिए दूसरे जिले अलीराजपुर, बड़वानी, धार, झाबुआ में स्व–सहायता समूह को प्रशिक्षण देने गयीं। **स्कोच अवॉर्ड के लिए दिल्ली गई एवं एस.आर.एल.एम. एवं डी.पी.आई.पी.** के सभी जिले के स्टॉफ एवं समुदाय को भी वह सी.एल.एफ. के माध्यम से प्रशिक्षण दे रहीं हैं। इस उपलब्धि से उनके परिवार, समाज, गांव एवं जिलों मे उन्हें अलग पहचान मिली है, वह अन्य लोगों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत बन गई हैं।

निष्कर्षः–

श्रीमती सुशीला बाई की इस कहानी के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि, गरीबी की समस्या से छुटकारा पाने के लिए एकजुट होने की बहुत जरूरत है। पारिवारिक मुसीबतों से जूझ रहे श्रीमती सुशीला बाई के परिवार को समूह ने सहारा दिया। श्रीमती सुशीला बाई में इतनी हिम्मत आई कि वे स्वंय सशक्त तो हुईं ही और भी अनेकों महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बन गईं।